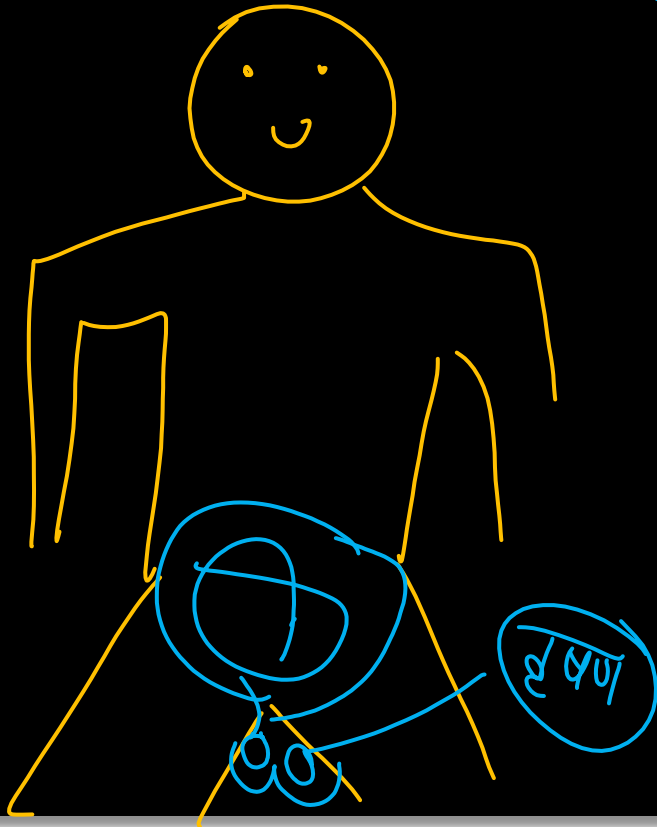


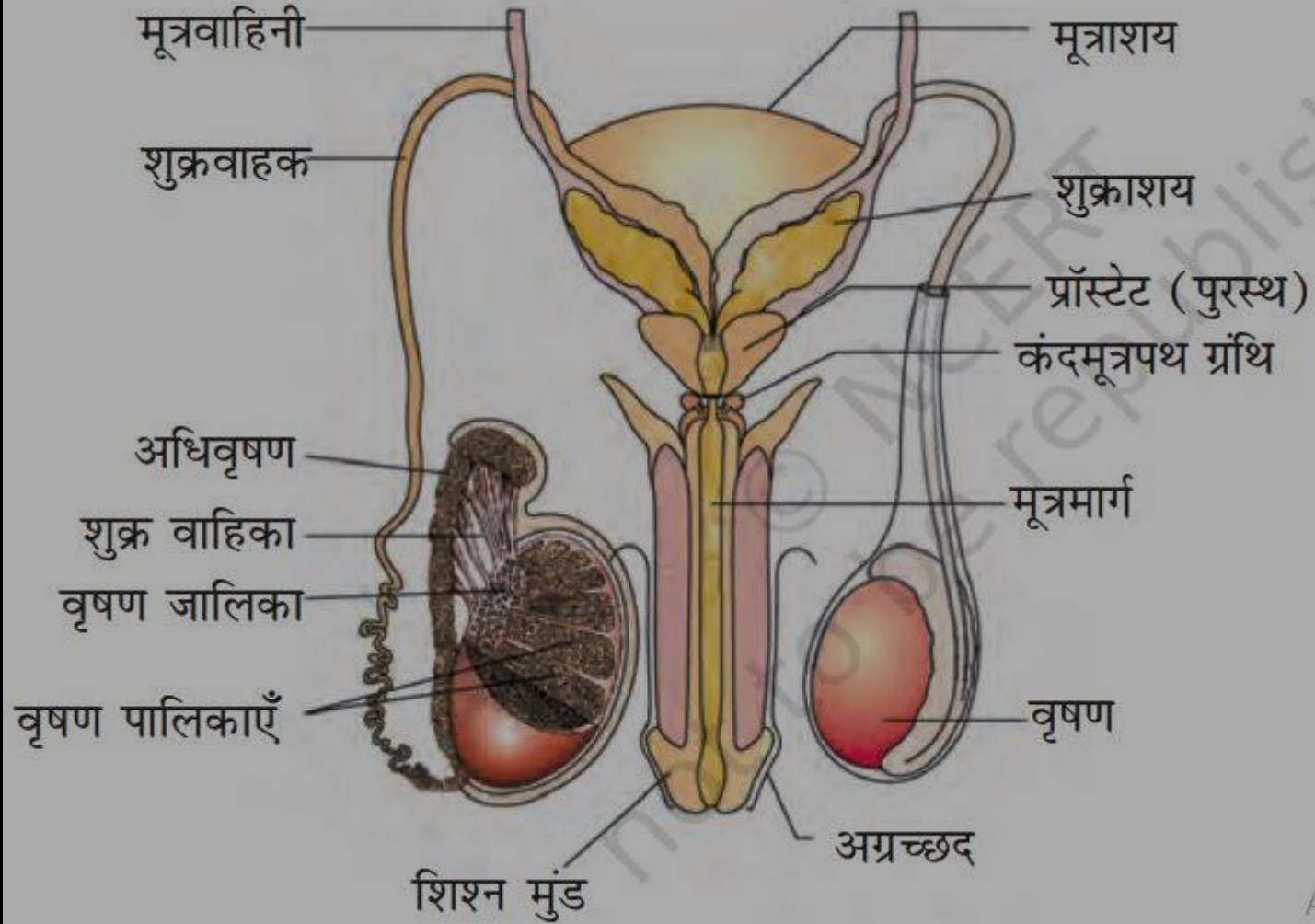
## नर जनन तंत्र

प्राथमिक अंग : वृषण (Testis)

सहायक अंग - आधिदृषण Epididymis, शुक्रवाहक  
vasa deferentia  
शिश्न (Penis)

सहायक ग्रन्थि : - शुक्राशय seminal  
vesicle, प्रोस्टेट ग्रन्थि, बल्बोयूरेथ्रल  
ग्रन्थि





## નર જનન તંત્ર

नीच  
(Gemen)

8 25. d. d. 18. 18  
Vasa differentia

⑨ रिश्ता  
Reris

① एषपानोश - ②  
Scorum

## ② दृष्टान्त Testis

③ तृष्ण पालिका  
(250-300) Testicular lobules

④ शुक्रजनक कोशिका (1-3)  
Seminiferous tubules

⑤ वृषण जालिका  
Rete testis

⑥ शुक्रवाहिनी  
Vasa efferentia

7) आधिदृषण (epididymis)

Fore skin अधःपृष्ठ

बल्बोयुरेथिल (2)  
Ca<sup>++</sup>, enzyme ग्रन्थि

Smell  
colour प्रेस-टेस्ट ग्रन्थि (1)

25-01-21 (2)  
Seminal vesicle

मूत्रवाहिनी

शुद्धादि

25, 8103

दीर्घ

Smell  
Colour

मूलमार्ग

31/12/24

उत्तराली कोरमा  
लिज्जा कोरिका

सूक्ष्मजीव

२३/५/७३  
निर्माण

① नर जय कोरीका

② सरटोली कोरिका

## नर जनन तंत्र

②  
Scrotum  
तृषणकोश

T  
Testis  
तृषण

T  
Testicular Lobules  
तृषण-पालिका

S - Semiferous vessels शुक्रजनन कोशिका

T  
R ] Rete testis - तृषण पालिका

E - Vasa efferentia शुक्रवाहिनी

E - Epididymis ओधि तृषण

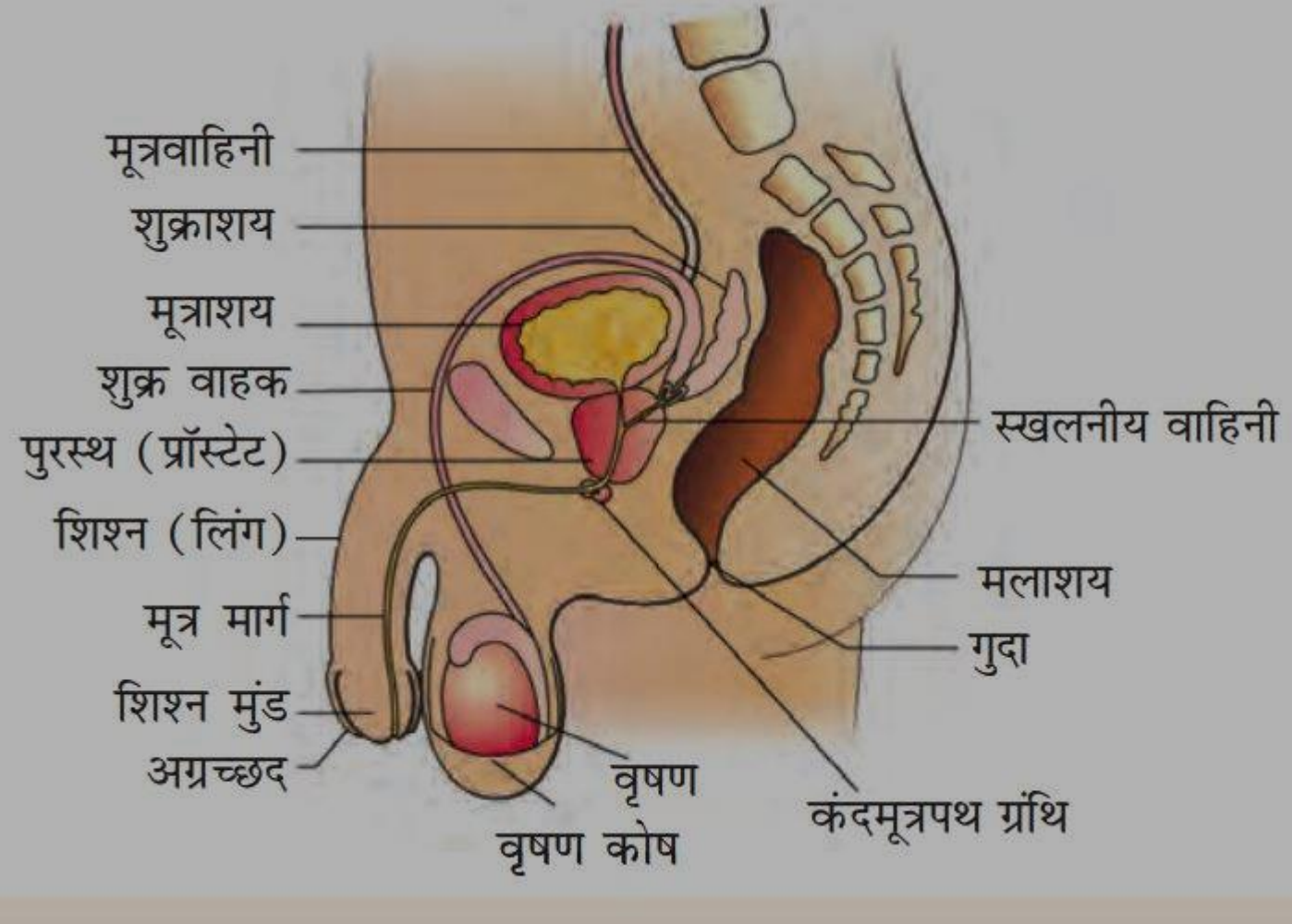
~~H/I~~

शुक्रवाहक  
V - Vasa deferentia

शुक्राशय  
S - Seminal vesicle

P - Prostate gland

B - Bulbourethral gland.



- शरीर में वृषण उदर गुहा वेफ बाहर एक थैली/धनी में स्थित होते हैं जिसे वृषणकोष (स्क्रोटम) कहते हैं।
- वृषणकोष वृषणों के तापमान को (शरीर के तापमान से 2–2.5 डिग्री सेंटीग्रेड) कम रखने में सहायक होता है।
- जो शुक्राणुजनन के लिए आवश्यक है, जिसकी लम्बाई लगभग 2 से 3 सेमी. होती है।
- वृषण सघन आवरण से दका रहता है। प्रत्येक वृषण में लगभग 250 कक्ष होते हैं। जिन्हें वृषण पालिका (टेस्टिकुलर लोब्युल्स) कहते हैं।

- प्रत्येक वृषण पालिका के अंदर एक से लेकर तीन अति कुंडलित शुक्रजनक नलिकाएँ (सेमिनिफेरस ट्यूबुल्स) होती हैं जिनमें शुक्राणु पैदा किए जाते हैं।
- प्रत्येक शुक्रजनक नलिका का भीतरी भाग दो प्रकार की कोशिकाओं से स्तरित होती है, जिन्हें नर जर्म कोशिकाएँ (शुक्राणुजन / स्पर्मेटोगोनिया) और सर्टोली कोशिकाएँ कहते हैं।

- नर जर्म कोशिकाएँ अर्धसूत्री विभाजन (या अर्धसूत्रण) के फलस्वरूप शुक्राणुओं का निर्माण करती हैं।  
जबकि सर्टोली कोशिकाएँ जर्म कीशिकाओं को पोषण प्रदान करती हैं।
- शुक्रजनक नलिकाओं के बाहरी क्षेत्र को अंतराली अवकाश (इंटरस्टीशियल स्पेस) कहा जाता है। इसमें छोटी-छोटी रुधिर वाहिकाएँ और अंतराली कोशिकाएँ (इंटरस्टीशियल सेल्स) या लीडिंग कोशिकाएँ (इंटरस्टीशियल सेल्स) होती हैं। लीडिंग कोशिकाएँ पुंजन (एंड्रोजन) नामक वृषण हार्मोन संश्लेषित व स्रवित करती हैं।



- यहाँ पर कुछ अन्य कोशिकाएँ भी होती हैं जो प्रतिरक्षात्मक कार्य करने में सक्षम होती हैं।
- पुरुष लिंग सहायक नलिकाओं के अंतर्गत वृषण जालिकाएँ (रेटे टेस्टिस), शुक्र वाहिकाएँ (वास डेफेरेंशिया) अधिवृषण (ऐपिडिडिमिस) तथा शुक्रवाहक (वास डेफेरेंस) होते हैं। वृषण की शुक्रजनक नलिकाएँ वृषण नलिकाओं के माध्यम से शुक्रवाहिकाओं में खुलती हैं। यह शुक्रवाहिका वृषण से चलकर अधिवृषण में खुलती हैं, जो प्रत्येक वृषण के पश्च सतह पर स्थित होती है।
- यह अधिवृषण शुक्रवाहक की ओर बढ़ते हुए उदर की ओर ऊपर जाती हैं और मूत्राशय के ऊपर की ओर लूप बनाती है।

- इसमें शुक्राशय से एक वाहिनी आती है और मूत्र मार्ग में स्खलनीय वाहिनी के रूप में खुलती है।
- ये नलिकाएँ वृषण से प्राप्त शुक्राणुओं का भंडारण तथा मूत्र मार्ग से इनका बाहर स्थानांतरण करती हैं।
- मूत्रमार्ग मूत्राशय से निकल कर पुरुष के शिश्न (पेनिस) के माध्यम से गुजरता हुआ बाहर की ओर एक छिद्र के रूप में खुलता है जिसे मूत्राशय मुख (यूरेथ्रल मीऐटस) कहते हैं।

- शिशन, पुरुष की बाहरी जननेन्द्रिय है। यह विशेष प्रकार के ऊतकों का बना होता है जो शिशन के उद्घर्षण या उठान (इरेक्शन) में सहायता प्रदान कर वीर्यसेचन (इंसेमिनेशन) को सुगम बनाता है।
- शिशन का अंतिम वर्धित भाग शिशन मुंड (ग्लॉस पेनिस) कहलाता है जो एक ढीली त्वचा से ढका होता है, जिसे अग्रच्छद (फोरस्किन) कहते हैं।
- पुरुष लिंग की सहायक ग्रंथियों के अंतर्गत एक जोड़ा शुक्राशय, एक पुरस्थ (प्रोस्टेट) ग्रंथि तथा एक जोड़ा बल्बोयूरेथ्रल ग्रंथियाँ शामिल होती हैं।

- इन ग्रंथियों का स्राव शुक्रिय (सेमिनल) प्लाज्मा का निर्माण करता है जो फ्रुक्टोज (फल शर्करा) कैल्सियम तथा कुछ प्रकिण्व (एंजाइम्स) से भरपूर होता है।
- वल्वोयूरेथ्रल ग्रंथियों का स्राव मैथुन के दौरान शिश्न में स्नेहन (लूब्रिकेशन) प्रदान करने में भी सहायक होता है।

Thank You!